बदलेंगे जमाना

रेत के सागर में जोश की हिलोर

उरमूल सेतु संस्थान, लूणकरणसर के बाल मंचों का अध्ययन

Plan

बदलेंगे जमाना

रेत के सागर में जोश की हिलोर

यह अध्ययन उरमूल सेतु संस्थान के लिए उरमूल ट्रस्ट से दिपिका नैयर और रवि मिश्रा ने अरविंद ओझा के मार्गदर्शन में किया

फोटो– रवि मिश्रा एवं सेतु की लाइब्रेरी से

पीपल के तले

बखुसर गांव जहां कभी पहुंचना भी दूभर होता था। बीकानेर जिले की लूणकरणसर तहसील के गंगानगर और चूरू जिले की सीमा का एक छोटा सा गांव। गांव के बूढ़े पीपल पर पहले बड़े–बुजुर्ग बैठ कर ढ़ोरियॉ काता करते थे। अब उसी पीपल की छांव में गांव के बच्चे मिलते हैं। मिल बैठकर घर, गांव, गुवाड़ की बेहतरी के बारे में सोचते हैं। विचारते हैं। ठोस निर्णय लेते हैं।....और कुछ करते भी हैं। जमाने को बदलने के लिये !

संक्षिप्त विवरण

अध्ययन रिपोर्ट उरमूल सेतु संस्थान के बाल अधिकारों पर किये जा रहे प्रयासों को सामने लाती है। अध्ययन रिपोर्ट संस्था के बाल मंचों की प्रक्रिया और उनकी गतिविधियों से बाल अधिकारों को पाने और समुदाय में उनकी भागीदारी उजागर करती है। अध्ययन में यह बात सामने आती है कि अपने अधिकारों के बारे में बच्चों को सूचना, प्रशिक्षण के माध्यम से अवगत कराने और अभिभावक, शिक्षक, जनप्रतिनिधि और हितधारकों की बच्चों के प्रति संवेदनशिलता उन्हें आने वाले कल के लिये सशक्त बना सकती है।

Lunkaransar with Chhattargarh Map

अनुक्रम

1. परिचय	**6**
1.1 अध्ययन का मूल कारण	8
1.2 लक्ष्य और उद्देश्य	8
1.3 अध्ययन का स्कोप	9
1.4 अध्ययन की प्रक्रिया	9
2. बाल मंचो की सफलता की कहानी	**15**
खारबारा	15
मकड़ासर	21
507 हैड	24
रामबाग	26
बखुसर	30
3. उपब्धियां	**33**
4. निष्कर्ष	**35**
5. सुझाव	**36**

1. परिचय

जहां हर बच्चे को अपनी पूरी क्षमता विकसित करने का समान अवसर मिले हम ऐसे राजस्थान की कल्पना करते है।

राजस्थान सरकार

भारत में 1974 में बनी राष्ट्रीय बाल नीति पर 2008 में राजस्थान की सरकार को अपने राज्य में इस नीति में नवीनीकरण के साथ सुधार की जरुरत महसूस हुई। नई नीति का मुख्य उद्देश्य राज्य के हरेक बच्चे को एक ऐसा वातावरण दिया जाये जिसमें उसे बिना किसी भेदभाव के गरिमा और सुरक्षा के साथ बढ़ने और विकास करने का मौका मिले। राज्य सरकार की इस प्रारुप नीति की प्रतिक्रिया पर यह बात सामने आई कि इस नीति को लागू करने में बच्चों की भागीदारी एक अहम भूमिका अदा करेगी। इस नीति के मुख्य बिंदुओं पर राज्य में कई गैर सरकारी संस्थायें पहले से ही काम कर रही हैं। उनमें से एक है उरमूल सेतु संस्थान, जिसने अपने कार्यक्षेत्र में बाल मंचों की स्थापना करने की पहल की।

बाल मंच का परिचय– किसी भी समुदाय के विकास के लिये उस समुदाय में बच्चों की भागीदारी एक अहम भूमिका अदा करती है। बच्चों में अपने समुदाय के कार्यों में भागीदारी के लिये बाल मंचों का गठन किया गया। इन मंचों के माध्यम से बच्चे अपने अधिकारों को समझ कर उन्हें सुनिश्चित करने के लिये तैयार होते हैं। बच्चों को उनके अधिकारों के प्रति अवगत कराने और उनको पाने की प्रेरणा जगाने के लिये, उनके समुदाय के उत्थान के लिये पिछले 20 से भी अधिक वर्षों से कार्य कर रही संस्था उरमूल सेतु संस्थान उनका सहयोग कर रही है।

उरमूल सेतु संस्थान का परिचय– उरमूल सेतु संस्थान उत्तरी राजस्थान के रेगिस्तानी लोगों के जीवन की सामाजिक और आर्थिक दशा बदलने के लिये संगठित होकर काम करने वाली संस्था के रूप में जाना जाता है। वंचित और गरीब बच्चों के सम्पूर्ण विकास को केन्द्रित करके काम करना

सुरक्षा तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं अधिकारों के लिये उरमूल परिवार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने कार्यक्रमों के जरिए बच्चों के साथ काम कर रहा है। इस कार्य में उनका सहयोग देने के लिये समय–समय पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बच्चों के विकास के लिये काम करने वाले संगठन साथ आये हैं। वर्तमान में उरमूल सेतु संस्थान, प्लान इंडिया जो कि ''बाल केंद्रित सामुदायिक विकास का एक अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय संगठन है'' के सहयोग से बच्चों के विकास एवम् उनके अधिकारों की चेतना के लिये सक्रिय है।

बाल अधिकार पर उरमूल सेतु संस्थान का प्रयास–

उरमूल सेतु एक पंजीकृत संस्थान है जो बाल अधिकारों व समुदाय विकास के लिए कार्यरत है। लगभग 20 वर्षों से उरमूल सेतु संस्थान ने लूणकरणसर व सरदारशहर ब्लॉक में समुदाय व बच्चों के साथ काम किया है ताकि वे स्वावलम्बी बन सकें। साथ ही बच्चों को उनके अधिकार मिल पाऐं जिनमें जीवन जीना, सुरक्षा, विकास, सहभागिता, शिक्षा का अधिकार, उचित स्वास्थ्य संबंधित देखभाल, स्वस्थ वातावरण, रोजगार के अवसर एवं उन निर्णयों में भागीदारी का अधिकार शामिल है जिनसे बच्चों के जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। बाल मंच के माध्यम से सेतु संस्थान बच्चों को प्रोत्साहित करता है ताकि वे अपने विचारों को व्यक्त कर सकें एवं समुदाय की स्थिति को सुधारने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें। उरमूल सेतु संस्थान की गतिविधियों में विशेष है– असुरक्षित व कमजोर वर्ग के बच्चों व उनके समुदाय की परिस्थितियों में सुधार लाना, इनमें सड़कों पर रहने वाले बच्चे, शारीरिक असमर्थता से पीड़ित बच्चे, शोषित व गैर कानूनी तौर पर लाये गये बच्चे एवं बाल श्रमिक बच्चे शामिल हैं। इनके अलावा ऐसी लड़कियां जो ज्यादातर समुदाय में भेदभाव का शिकार होती हैं उन्हें ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों से बाहर निकालने में उरमूल सेतु संस्थान उनकी मदद करता है। उरमूल सेतु बच्चों के अधिकारों व उनकी समान भागीदारी के लिए पूरी तरह से समर्पित है। संस्थान समुदाय और बच्चों की क्षमताओं को विकसित करने हेतु कार्य करता है ताकि वे स्वयं भी विकास के दूसरे तरीकों से सीख लेकर अपनी जरूरतों को स्वयं पूरा कर सके।

उरमूल सेतु संस्थान एक ऐसी दुनिया की परिकल्पना के प्रति प्रयासरत है जिनमें बच्चे अपनी पूरी संभावनाओं और योग्यताओं को ऐसे समाज में विकसित कर सकें जहां लोगों के अधिकार व गरिमा का सम्मान हो।

1.1 अध्ययन का मूल कारण– अध्ययन करने का मूल कारण यह पता लगाना है कि क्या बच्चों को उनके अधिकारों को समझाने और उन्हें प्राप्त करने के लिये उरमूल सेतु संस्थान का यह प्रयास सही दिशा में है। साथ ही इनमें क्या नया जोड़ा जाये जिससे कि संस्था बाल अधिकारों की प्राप्ति के लिये चलाये जा रहे इन कार्यक्रमों के उद्देश्यों में सफलता प्राप्त करे। अध्ययन से प्राप्त विश्लेषण, एवं सुझाव कार्यक्रम को आने वाले दो सालों में और भी मजबूत बनाने की बात को रखता है।

1.2 उद्देश्य

अध्ययन का उद्देश्य बाल मंचों के माध्यम से बच्चों को उनके अधिकारों को दिलाने के लिये संस्था की रणनीति में नवीनीकरण लाना है। जिससे कि बाल मंच के निम्नलिखित उद्देश्य पूरे हो सके

- वर्ष 2013 तक 60 गांवों की ग्राम पंचायतों व ग्राम सभाओं में बाल मंच की 10 प्रतिशत से अधिक भागीदारी होना।
- अभिभावक, शिक्षक, जनप्रतिनिधि व अन्य हितधारक, बच्चों के प्रति संवेदनशील हों ।
- बाल मंच बैठक के साथ साथ संकुल सहित जिला स्तर पर होने वाली बैठकों, कार्यशाला में बच्चों के निर्णय लेने और भागीदारी के प्रतिशत को बढ़ावा देना।

1.3 अध्ययन का लक्ष्य

अध्ययन का लक्ष्य बाल मंचों का अवलोकन करके उनकी अच्छाईयों को उभारना है। इसके साथ ही बाल मंच की गुणवत्ता के स्तर को बढ़ाने की संभावना तलाशना भी है, ताकि वह अपने अधिकारों को समझ कर उन्हें प्राप्त करने के लिये तैयार हों जिससे कि वह

- शिक्षा से वंचित बच्चों को स्कूल से जोड़ने का प्रयास करें
- समुदाय के बीच एक ऐसा वातावरण तैयार करें जिसमें उनके मूल्यों का विकास हो सके
- मंच द्वारा मिली सीख का अपने समुदाय में आदान–प्रदान करना ताकि वह अपने समुदाय के विकास में भागीदारी निभा सकें

1.4 अध्ययन की प्रक्रिया

अध्ययन दिपिका नैयर और रवि मिश्रा के द्वारा उरमूल सेतु संस्थान की सहायता से किया गया जिसमें निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाया गया।

- संस्था की टीम के साथ सामूहिक चर्चा कर उन बाल मंचों को चिन्हित किया गया जिनका अध्ययन करना चाहिये
- संस्था की टीम के साथ प्रत्येक बाल मंच पर कार्य कर रहे संकुल प्रभारी और कार्यकर्ताओं की टीम के साथ दिनांक 14 जून 2011 को खारबारा, मकड़ासर, 507 हैड और 16 जून 2011 को रामबाग और बखुसर के बाल मंचों का भ्रमण किया गया।
- बाल मंच के सदस्यों के साथ उनके मंच को लेकर चर्चा की गई।
- बाल मंच का संचालन करने वाले संस्था के कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा की गई।
- अभिभावक और समुदाय के साथ चर्चा की गई।
- गांव और बाल मंच द्वारा संचालित पुस्तकालयों का अवलोकन किया गया।

क्रम संख्या	बाल मंच के गांव	गठन का वर्ष	बच्चों की संख्या	संकुल का नाम
1	खारी	2010	15	कालू
2	आडसर	2010	15	
3	कुजटी	2009	12	
4	नकोदेसर	2007	25	
5	सहजरासर	2009	12	
6	कालू	2006	15	
7	कवंलासर	2009	10	
8	घड़सीसर	2009	17	घड़सीसर
9	अड़सीसर	2009	15	
10	रंगाईसर	2010	14	
11	पुनुसर	2009	20	
12	करणसर	2008	10	
13	सोमासर	2010	20	
14	सोनपालसर	2008	24	
15	पनपालिया	2009	12	
16	कीकासर	2008	20	
17	रामबाग	2007	25	रामबाग
18	साबणियां	2007	20	
19	धीरदान	2008	25	
20	बखुसर	2007	20	
21	करणीसर	2009	20	
22	राजपुरिया	2010	20	
23	बिंझरवाली	2009	25	राजासर भाटियान
24	केलां	2007	20	
25	राजासर भाटियान	2007	25	
26	मकड़ासर	2007	20	
27	सरदारपुरा	2009	20	
28	1 एस एल डी	2007	12	खारबारा
29	खारबारा	2007	28	
30	4 डीएसएम	2007	10	
31	4 एसएलडी	2007	12	
32	10 जीएम	08	25	507 हैड
33	7 जीएम	2010	15	
34	सादोलाई	2009	25	
35	12 एसएलडी	2009	25	
36	4 डीएलएम	2010	10	
कुल मंच	**36**		**658**	**6 संकुल से**

सेतु द्वारा बाल मंचों का सशक्तिकरण

1. बाल अधिकार व भागीदारी विषय पर बाल मंच के सदस्यों का प्रशिक्षण– बाल मंच के सदस्यों को बाल अधिकार व भागीदारी विषय पर संस्था द्वारा नवंबर 2010 में 5 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया। जिसमें 18 गांवों के 188 बच्चों ने भाग लिया। इन प्रशिक्षण के माध्यम से बच्चों को बाल विवाह, बाल मजदूरी, लड़का–लड़की में भेदभाव, बच्चों पर हिंसा और उनके अधिकारों का शोषण जैसी बातों से अवगत कराया गया। साथ ही यह भी बताया गया कि कैसे समुदाय में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर इन गंभीर समस्याओं को खत्म किया जा सकता है।

2. बाल मंच के सदस्यों का नेतृत्व प्रशिक्षण– 16 गांव के 64 बाल मंच सदस्यों को मार्च 2010 में नेतृत्व करने का प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें उन्हें सार्वजनिक चर्चाओं में बोलने के लिये तैयार करना, समूह में काम करने, समुदाय में भागीदारी बढ़ाने में और विकास में उनकी भूमिका, निर्णय लेने की क्षमता, अच्छे नेता के आवश्यक गुण और नेतृत्व का वास्तविक अर्थ सिखाये गये।

3. बाल मंच के सदस्यों की ब्लॉक स्तरीय अर्द्ध वार्षिक बैठक–ब्लॉक स्तर पर मार्च और मई 2010 में दो दिवसीय बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक के माध्यम से उन्हें बाल अधिकार के बारे में विस्तार से समझाया गया। बैठक में उन्हें सरकार द्वारा बाल अधिकारों के संरक्षण में चलाई जा रही योजनाओं से अवगत कराया गया और उन योजनाओं से लाभ लेने का तरीका भी बताया गया। बैठक में आये मंचों के सदस्यों ने निर्णय लिया कि वह अपने समुदाय में बैठक के माध्यम से बच्चों से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करेंगे। चर्चा में सामने आई परेशानी को उनसे संबंधित विभागों के अधिकारियों के सामने रख उनके समाधान के लिये योजना बनाने का लक्ष्य रखा गया।

4. बच्चों द्वारा बालवाणी का प्रकाशन– बाल मंच द्वारा अपने आसपास स्थित समस्याओं और उनसे उभरने की कहानी को कहानियों, लेख, चित्र द्वारा प्रस्तुत करने के लिये बालवाणी नामक पत्रिका का प्रकाशन संस्था के सहयोग से किया गया। इस पत्रिका में मौजूद सभी कहानियां, लेख और चित्र बाल मंच के सदस्यों द्वारा लिखे और बनाये गये। इस पत्रिका का वितरण बाल मंचों, समुदाय के बीच, ग्राम पंचायतों सहित सरकारी विभागों और साथी एजेंसियों में किया गया। बालवाणी ने बच्चों के अधिकारों के प्रति समुदाय, जनप्रतिनिधि और हितधारकों के बीच बाल अधिकारों को लेकर जागरुकता का काम बेहतर तरीके से किया।

5. बाल मंच सदस्यों व संस्थान के कार्यकर्ताओं का जयपुर व दिल्ली भ्रमण– कुल 64 बच्चों व कार्यकर्ताओं को दिल्ली व जयपुर शहर का भ्रमण करवाया गयां इस भ्रमण से बच्चों को महानगर की स्थिति तथा नगर अवलोकन का अवसर और ऐतिहासिक स्थलों के बारे में पूर्ण रूप से समझना रहा है। बच्चों ने 3 दिन जयपुर तथा 3 दिन दिल्ली शहर का भ्रमण किया। यह भ्रमण राजस्थान पर्यटन विकास निगम के सहयोग से किया गया। बच्चों के लिए अपने जीवन का यह पहला और महत्वपूर्ण भ्रमण था। बच्चों ने पूरे शहर को अच्छी तरह से देखा था और इसी के साथ अच्छे होटल में ठहरने का लुत्फ भी उठाया था। बच्चों का कहना था कि अगर उरमूल सेतु संस्थान ऐसा भ्रमण नहीं करवाती तो हम सब बच्चों के लिए अपनी पूरी जिन्दगी में दिल्ली व जयपुर तक आने का एक सपना ही बना रहता। भ्रमण के दौरान उपराष्ट्रपति श्रीमान भैंरोसिंह तथा राज्यपाल के साथ बच्चों की बातचीत करवायी गयी। यह वार्तालाप बच्चों व दोनों महान विभूतियों को अच्छी लगी।

6. बाल पंचायत की अवधारणा पर बाल मंच के बच्चों का भ्रमण– बाल पंचायत की अवधारणा पर 30 बाल मंचों में से प्रत्येक से एक सदस्य का चयन कर उन्हें सामाजिक कार्य और अनुसंधान केन्द्र, तिलोनिया, जिला अजमेर में भ्रमण के लिये ले जाया गया। जहां उन्होंने बाल पंचायत के बारे में जाना। इस भ्रमण के माध्यम से मंच के सदस्यों ने एक बेहतर बाल मंच का संचालन करना और उसकी विशेष बातों के बारे में भी जाना।

7. बालिका मिलन–जहां बाल मंच की किशोरियां, किशोरी प्रेरणा मंच की सदस्य और संस्थान के विभिन्न कार्यक्रमों से जुड़ी किशोरियां एक मंच पर आकर मिलती हैं। यहां मिलकर वह अपनी सीख और अनुभवों को एक दूसरें से बांटती हैं। मन की गुत्थियों को सुलझाती हैं। विशेषज्ञ और संदर्भ व्यक्तियों से अपने सवालों के जवाब पाती हैं और भविष्य में अपनी राह चुनने की सलाह लेती हैं। दिसंबर 2010 में सेतु ने तीन दिवसीय बालिका मिलन समारोह का आयोजन किया। जिसमें 60 गांवों की 738 किशोरियों ने भाग लिया। यहां उन्होंने परामर्श कार्यक्रम में भाग लेकर भविष्य की योजना बनाई। इस समारोह में आये विशेषज्ञों ने सरकार द्वारा बालिकाओं के लिये चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में किशोरियों को जानकारी दी। किशोरियों को पेपर बैग, साबुन और सर्फ, अचार व अन्य खाद्य पदार्थ और हस्तकला का व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया गया। समारोह में योग शिविर के माध्यम से किशोरियों को योग और योग के माध्यम से बीमारियों से निजात पाने की मुद्राओं को करवाया गया। बालिका मिलन ने न सिर्फ किशोरियों को जागरुक करने का काम किया बल्कि उनके अभिभावको एवं समुदाय को बालिकाओं के अधिकार, सपनों और आकांक्षाओं के बारे में संवेदना जगाने का काम किया।

9. बाल कल्याण समिति, किशोर न्याय बोर्ड ,चाइल्ड लाईन और बाल सरंक्षण पर सूचना और जानकारियों का प्रकाशन – बाल मंच, बाल क्लब और किशोरी प्रेरणा मंच के माध्यम से अपने अधिकारों को पाने और समुदाय के विकास में जुटे किशोर और किशोरियों की बातों को इकट्ठा कर एक सूचना केंद्रित प्रचार प्रसार सामग्री (आईईसी) का प्रकाशन किया गया। जिसमें बाल कल्याण समिति, किशोर न्याय बोर्ड, चाइल्ड लाईन द्वारा दी गई जानकारियों का समावेश रहा। इस आईईसी सामग्री की 10 हजार कॉपियों को वितरण बाल क्लब, बाल मंच व अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों में किया गया।

8. बाल सम्मेलन– बाल सम्मेलन के माध्यम से अलग–अलग बाल मंचों के सदस्य आपस में मिलते हैं। यहां मिलकर वे संबंधित मुद्दों पर विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। बाल मंच के माध्यम से विशेषज्ञों द्वारा उनका मार्गदर्शन, उनमें नये विचारों को जन्म देता है। सेतु के माध्यम से 5 बाल सम्मेलन का आयोजन कलस्टर स्तर पर किया जा चुका है। जिसमें 60 गांव के 726 बच्चों ने भाग लिया। बाल सम्मेलन की गतिविधियों के माध्यम से उन्हें बाल अधिकार, बाल सरंक्षण, स्वास्थ्य और साफ–सफाई के बारे में जानकारी, पर्यावरण सरंक्षण और जल संचन के बारे में विस्तार से बताया गया। ताकि वह इस सीख का पालन कर अपने आपको और अपने समुदाय को बेहतर बना सकें। बाल सम्मेलन में बच्चों के चहॅुमुखी विकास को ध्यान में रखते हुये खेलकूद, नाटक, गीत–संगीत, समूह चर्चा आदि का आयोजन भी किया गया।

संस्था समय–समय पर बच्चों, समुदाय, जनप्रतिनिधि और हितधारकों के साथ बाल अधिकारों पर निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन कर रही है

- बच्चों के प्रति संवेदनशील मुद्दों पर मुखिया लोगों का सेमीनार
- बच्चों के साथ सरकारी अधिकारी और जनप्रतिनिधियों की ब्लॉक स्तरीय नेटवर्क बैठक
- अभिभावक, जनप्रतिनिधि और युवा लोगों का ग्राम स्तरीय प्रशिक्षण
- ब्लॉक व जिला स्तर पर सरकारी अधिकारियों व मीडिया सदस्यों की बाल भागीदारी विषय पर समीक्षा बैठक
- बाल पंचायत अवधारणा पर संस्थान के कार्यकर्ताओं का समय–समय पर प्रशिक्षण
- बाल सुरक्षा एवं शोषण मुद्दे पर जिला स्तरीय नेटवर्क बैठक

बाल मंचों की सफलता की कहानियां

खारबारा गांव के स्वामी दयानंद सरस्वती मंच की कहानी

बीकानेर जिले की लूणकरणसर पंचायत समिति का दूरस्त गांव, खारबारा गंगानगर जिले की सीमा पर बसा है। उरमूल सेतु संस्थान इस गांव में 2008 से ही किशोरी प्रेरणा मंच की स्थापना कर महिलाओं के स्वास्थ्य और समुदाय की अन्य समस्याओं से उसे उभारने के लिये किशोरियों के साथ कार्य कर रहा है। वर्ष 2010 की शुरुआत में बाल मंच की स्थापना की गई। समुदाय में किशोर और किशोरियों का इकट्ठे बैठ कर बाते करना आदि सामाजिक दृष्टि से सही नहीं माना जाता था। लेकिन उरमूल सेतु के कार्यकर्ताओं ने समुदाय को इसके लिये प्रेरित किया। कार्यकर्ताओं ने वर्तमान में महिलाओं की स्थिति का उदाहरण देकर समुदाय को इसके लिये जागरुक किया। नतीजा यह निकला कि बाल मंच में किशोरी और किशोर आपस में सभी तरह के मुद्दों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि को लेकर इकट्ठे चर्चा करते हैं। 350 से भी ज्यादा परिवारों वाले इस गांव के बाल मंच में 31 सदस्य हैं। मंच का हर एक सदस्य अपने आप में विशेष विचार रखता है। सभी अपने विचारों को रखकर उन पर काम करते है साथ ही एक दूसरे को उस काम में हौसला भी देते हैं। मंच प्रतिमाह उरमूल सेतु द्वारा स्थापित सबसेंटर पर होने वाली अपनी बैठकों के साथ–साथ अपने स्तर पर आपस में मिलकर अपने मुद्दों पर विचार रखते हैं और अपने परिवार सहित अपने आसपास की अन्य समस्याओं को भी हल करने में एक–दूसरे की सहायता करते हैं। अपनी समस्याओं को हल करने वाले सहभागियों की भी वे हर प्रकार से मदद करते हैं। मुद्दों पर उनकी बहस, मंच के सभी सदस्यों को अपने विचार रखने में सहायता करती है।

मंच के कार्य

मंच के गठन के दौरान सदस्यों की सहमति से मंच के सचिव–हीरालाल, अध्यक्ष–मुकेश और उपाध्यक्ष–लक्ष्मण का चयन किया। सेतु संस्था ने मंच के बच्चों को कहानियों के माध्यम से विभिन्न और विशेष जानकारियॉ देने के लिये एक पुस्तकालय की शुरुआत की। इस पुस्तकालय के संचालन का जिम्मा मंच के सदस्यों ने उठाया। इससे उनकी नेतृत्व क्षमता देखने को मिलती है। पुस्तकालय के संचालन के लिये मंच ने अपने नियम बना रखे हैं।

मंच पुस्तकालय के संचालन के लिये हर सदस्य से प्रतिमाह 10 रुपये का शुल्क लेता हैए जो वह अपने जेबखर्च से बचा कर देते हैं। इनसे नई किताबे खरीदी जाती हैं। समय पर किताबे पुस्तकालय में न लौटाये जाने पर मंच अपने सदस्यों पर विलम्ब शुल्क भी लगाता है। बाल अधिकारों के उद्देश्य की प्राप्ति के लिये संस्था के सहयोग से बच्चों द्वारा त्रैमासिक न्यूज लैटर जैसे बालवाणी के प्रकाशन पर मंच उसके हर एक बिंदुओं को जानने का इच्छुक है ताकि वह अपना खुद का न्यूज लैटर निकाल सके। इसके लिये उन्होंने अपने स्तर का बिजनेस मॉडल भी बना लिया है। उनका यह प्रयास निर्णय लेने की क्षमता और आत्मनिर्भर बनने की प्रक्रिया को सामने रखता है।

खारबारा स्थित बाल मंच अपने अधिकारों को स्थापित करने और समुदाय के बीच अपनी भागीदारी निभाने की प्रक्रिया में अपने आपको मजबूत बनाने में जुट गया है। इस बात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने एक ऐसे बच्चे को स्कूल से जोड़ने का काम किया जो न सिर्फ सामाजिक बल्कि अपने शारीरिक कारणों से स्कूल जाने से वंचित था।

मंच के उपाध्यक्ष लक्ष्मण ने बताया कि खारबारा गांव के निकट स्थित 4डीएसएम चक में पांव से विकलांग जियाराम को स्कूल में प्रवेश तो मिला हुआ था लेकिन विकलांग होने के कारण वह स्कूल नहीं जाता था। परीक्षा देने के लिये उसका बड़ा भाई उसे स्कूल लेकर आता था। उरमूल सेतु संस्थान की तरफ से बाल अधिकारों की जानकारी और शिक्षा के अधिकार के अंतर्गत शारीरिक रुप से अक्षम बच्चों को स्कूल से जोड़ने के बारे में जब बाल मंच के सदस्यों को पता लगा तो उन्होंने जियाराम को स्कूल से जोड़ने का निर्णय लिया। मंच के सदस्यों ने बैठक में विचार–विमर्श करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि अगर जियाराम को विकलांग साइकिल मिल जाये तो वह प्रतिदिन स्कूल आ सकता है और उनके साथ बैठकर पढ़ाई भी कर सकता है। मंच जियाराम को विकलांग साइकिल दिलाने की प्रक्रिया में जुट गया। इस बीच मंच के सदस्यों ने यह भी निर्णय लिया कि जब तक जियाराम को साइकिल नहीं मिल जाती मंच उसे स्कूल लाने और वापस घर छोड़ने की जिम्मेदारी लेगा। उन्होंने जियाराम के माता–पिता से इस बाबत बात की और अपने प्रयासों से उनका विश्वास जीत लिया।

मंच के सदस्यों में लक्ष्मण, मुकेश और हीरालाल उसे साइकिल से स्कूल लेकर आते। मंच के एक सदस्य प्रहलाद के पिता विकलांगों को उनके विकलांगता का प्रमाण पत्र और सरकार व गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा मिलने वाली सुविधाओं को दिलाने में सहायता करते थे। प्रहलाद और मंच के अन्य सदस्यों ने उनसे संपर्क कर जियाराम को विकलांग साइकिल दिलाने में सहायता करने की मांग की। प्रहलाद के पिता ने जियाराम का विकलांग प्रमाण पत्र बनवाया जिसके बाद सेतु संस्थान की मदद से जियाराम को विकलांग साइकिल मिल गई। इस तरह से मंच के सदस्यों ने न सिर्फ जियाराम को उसके अधिकारों को दिलाने का कदम उठाया, बल्कि समुदाय के सामने एक बड़ा उदाहरण भी रखा ताकि वह ऐसे प्रयासों को ध्यान में रखते हुये बच्चों के प्रति संवेदनशील हों। मंच ने इसके साथ–साथ 1 एसएलडी में शिक्षा से वंचित गोपाल को स्कूल से और संतोष नामक किशोरी को कस्तूरबा गांधी विद्यालय से जोड़ा।

बच्चों में समुदाय व विकास की प्रक्रिया में भागीदार बनने की चाह इस तरह से दिखाती है कि खारबारा गांव में महिलाओं के स्वास्थ्य को लेकर समय–समय पर लगने वाले ओपीडी कैंप में इलाज के लिये महिलाओं को चिन्हित करना और उन्हें इलाज के लिये कैंप में लेकर आने का काम मंच के सदस्यों ने किया है। वहीं दूसरी ओर टीकाकरण, बीमारी से बचाव के लिये सरकार द्वारा चलाये गये अभियानों को यह मंच बेहतरीन तरीके से लागू करने में मदद करता है। मंच की सदस्य नरेश ने बताया कि यहां की घरेलू महिलाओं को रोग होते हुये भी वह अपने परिवारजनों को उस रोग के बारे में बताने से कतराती थी। उन्हें शायद यह लगता था कि उनके रोग को जानने के बाद परिवार में उसके प्रति हीन भावना आ जायेगी। मंच की किशोरी सदस्यों ने अपने परिवार और आस–पड़ोस की ऐसी महिलाओं को चिहित किया। जिसके बाद उन्हें ओपीडी कैंप लाया गया, जहां उनके इलाज की प्रक्रिया शुरु हुई। गांव से दूर चक–ढाणी में रहने वाली महिलाओं के पास सुगमता से एएनएम पहुंच सके इसके लिये मंच के सदस्य खुद उनको अपने साथ लेकर जाते है। वर्तमान में आगनबाड़ी केंद्र अस्थायी है, लेकिन सेवाओं का संचालन भली–भांति तरीके से हो रहा है। ऑगनबाड़ी केंद्र को स्थायी करने और एक जगह दिलाने के लिये मंच प्रयासरत है।

गांव और उसके आसपास के इलाकों में विकलांगों को सेवाएं मुहैया करवाना और उनमें आम लोगों के समान जिंदगी जीने का जज्बा पैदा करने में मंच ने खासा रोल अदा किया है। समुदाय के साथ–साथ खुद में अच्छे मूल्यों के विकास के लिये मंच के सदस्यों ने अपने समुदाय को **नशा मुक्त** करने के लिये अपनी आवाज उठानी शुरु कर दी है।

नशा न करना, तुम न बहना– बात ठान लो, ओ मेरे भाईयों.....

जैसे गीतों और चित्रों के माध्यम नशे के दुष्प्रभावों को दिखाने और स्कूलों में नाटकों का मंचन करके मंच अपने गांव और समुदाय को सुरक्षित और मजबूत बनाने में जुटा हैं। मंच के सदस्य गजेंद्र सिंह भाटी ने बताया कि मंच में जुड़ने से पहले मंच के कई सदस्य गुटखा आदि का सेवन करते थे। मंच के सदस्यों ने उन्हें नशे के दुष्प्रभावों के बारे में सचेत किया। जिसके बाद उन्होंने गुटखा व अन्य नशीली चीज खाना छोड़ दिया है। ठीक इसी तरह का संदेश मंच के सदस्य अपने स्कूलों में भी दे रहे हैं। नतीजतन स्कूली बच्चों में लगी यह लत अब तेजी से छूट रही है। स्कूल में प्रबंधन को लेकर मंच ने अलग–अलग टीमों का गठन किया हुआ है । उदाहरण के तौर पर एक टीम साफ–सफाई का ध्यान रखती है तो दूसरी स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के संचालन में सहयोग करती है। स्कूल में बाल सभा और प्रार्थना सभा का संचालन भी बाल मंच के सदस्य करते हैं। स्कूल में लगे पेड़–पौधों के सरंक्षण के लिये बाल मंच की टीमें उन्हें नियमित पानी देती है।

स्कूल की समस्याओं को लेकर बाल मंच के सदस्य अपने प्रस्तावों के माध्यम से आला अधिकारियों तक अपनी बातों को पहुंचाने में प्रयासरत है।

बाल मंच की मांगें–

1. उनके प्रस्तावों पर निर्णय लेने वाले अधिकारियों के साथ बैठकर अपनी समस्याओं के समाधान के लिये विचार–विमर्श करना।

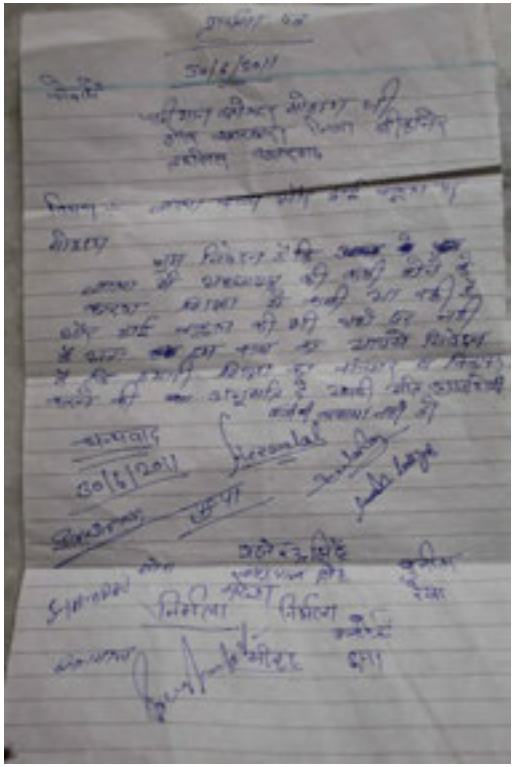

2. मंच के बच्चे अपने जेबखर्च का एक बड़ा भाग बाल पत्रिका व अन्य पाठ्य सामग्री खरीदने में खर्च करते हैं। मंच की मांग है कि संस्था के माध्यम से उन्हें खेलकूद का सामान उपलब्ध कराया जाये और साथ में समय–समय पर प्रशिक्षण भी दिया जाये।

3. संस्था द्वारा प्रकाशित बच्चों और समुदाय की समस्याओं को कहानी के माध्यम से कहने वाली *बालवाणी* का समय–समय पर प्रकाशन और उस पत्रिका के प्रकाशन तक के हर एक बिंदु से उन्हें जोड़ना।

मंच की आगे की योजनाः– मंच की आगे की योजना अधिक से अधिक सदस्यों को साथ जोड़ने की है। जिससे कि उनके मंच को ज्यादा से ज्यादा मजबूती मिल सके। इससे वह अपने समुदाय, जनप्रतिनिधि, हितधारकों के बीच जल्द से जल्द बाल अधिकारों के प्रति संवेदनशिलता को बढ़ा सकते हैं।

फोटो के बारे में– बाल मंचों को सशक्त बनाने के लिए समय–समय पर सेतु द्वारा विभिन्न तरह के प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। इस फोटो में बाल मंच के सदस्य एड्स और एचआईवी के संक्रमण के बारे में विशेषज्ञ से जानकारी ले रहे हैं। ऐसे प्रशिक्षणों से मिली जानकारी का प्रचार–प्रसार वह अपने समुदाय के बीच करते हैं।

मकड़ासर गांव के बाल मंच की कहानी

बीकानेर जिले के लूणकरणसर पंचायत समिति क्षेत्र की सीमा पर स्थित मकड़ासर गांव के बाल मंच में गांव के 10 से 16 आयुवर्ग के 25 सदस्य है। पहले सदस्यों की संख्या 20 थी लेकिन मंच से जुड़े साथियों को देखकर 5 सदस्य और जुड़ गये। इनमें 15 किशोर और 10 किशोरियां हैं। नये सदस्यों ने भी मंच से जुड़ने की प्रकिया में भाग लेना शुरु कर दिया है। वह भी मासिक बैठकों में हिस्सा लेने में अपनी रूचि दिखा रहे है। उरमूल सेतु संस्थान इस गांव में पहले से ही किशोरी प्ररेणा मंच की स्थापना कर महिलाओं के स्वास्थ्य और समुदाय की अन्य समस्याओं को हल करने के लिये गांव की किशोरियों के साथ कार्य कर रहा है। वर्ष 2010 की शुरुआत में बाल मंच की स्थापना की

मंच के कार्य

मंच के गठन के दौरान सदस्यों की सहमति से मंच की अध्यक्ष–पूजा और उपाध्यक्ष–हिम्मतराम का चयन किया गया। इस गांव में जातिवाद एक बड़ी समस्या है। गांव में उच्च जाति के लोगों में अनुसूचित जातियों के प्रति छुआछूत की भावना अधिक थी। जिसका सीधा प्रभाव स्कूलों में देखा जा सकता था।

सेतु द्वारा बाल अधिकारों और शिक्षा के अधिकारों के प्रति बच्चों को सजग बनाने के लिये दिये गये प्रशिक्षण में यह जानने को मिला कि भेदभाव रहित शिक्षा पाना शिक्षा के अधिकार में है। मंच के सदस्यों ने इस मुद्दे को अपनी मासिक बैठक में रखा। जिसके बाद मंच ने यह निर्णय लिया कि वह सबसे पहले आपस में भेदभाव को मिटायेंगे। साथ ही स्कूल में भी इस बात का प्रचार–प्रसार करेंगे। सेतु कार्यकर्ता शीशपाल के अनुसार यहां के सरकारी विद्यालय में पहले उच्च जाति के बच्चे अनुसूचित जाति के बच्चों से अलग बैठा करते थे। साथ ही उनका खान–पान भी अलग होता था। मंच के सदस्यों ने स्कूल में अपने सहपाठियों को यह भेदभाव न करने के लिये प्रेरित किया। इसके लिये उन्होंने गांव के उच्च और अनुसूचित जाति परिवारों से सेतु कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर जागरुकता लाने का काम शुरु कर दिया है। जिसमें समुदाय के 70 फीसदी लोगों का समर्थन बाल मंच को मिलना शुरु हो गया है। हालांकि अभी भी कुछ परिवार भेदभाव का व्यवहार कर रहे हैं। सदस्य उन परिवारों को जागरुक करने में जुटे हुये हैं। जातिवाद को लेकर मंच के सदस्यों ने कबीर और उनके दोहों को समझना–समझाना शुरु किया है। जिसका श्रेय सेतु कार्यकर्ता को जाता है। मंच की अध्यक्ष पूजा ने बताया कि इस गांव के लोग पहले अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजा करते थे। संस्था के प्रयासों की बदौलत यहां के लोगों ने बच्चों को स्कूल भेजना शुरु कर दिया, लेकिन फिर भी कई परिवार जो कि अनुसूचित जाति के है अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेजा करते थे। मंच के सदस्यों ने मिलकर ऐसे परिवारों को स्कूल और शिक्षा के महत्व के बारे में समझाया। इस कार्य में सेतु कार्यकर्ता शीशपाल ने भी उनकी मदद की। सेतु

कार्यकर्ता और बाल मंच के सदस्यों ने मिलकर बच्चों को स्कूल भेजने के लिये प्रेरित करना शुरु कर दिया है। वहीं दूसरी और मंच की किशोरियां बाल विकास की प्रक्रिया में भागीदारी के तौर पर ऑगनबाड़ियों से बच्चों को जोड़ने का काम कर रहीं हैं। उन्होंने गांव मे घर–घर जाकर बच्चों को ऑगनबाड़ी से जोड़ने के लिये परिवारों से बात की, साथ ही यह भी समझाया कि ऑगनबाड़ी के माध्यम से मिलने वाले आहार से उनके बच्चों का पोषण बेहतर ढ़ग से होगा। ऑगनबाड़ी से जोड़ने पर उन्हें मनोरंजन के माध्यम से स्कूल से पहले की पढ़ाई मिल सकेगी। मंच की अध्यक्ष पूजा ने बताया कि उन्होंने घर–घर जाकर अभिभावकों को ऑगनबाड़ी के फायदों के बारे में जानकारी दी।

उन्होंने परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर बच्चों का ऑगनबाड़ी में पंजीकरण करवाया। वर्तमान में गांव के अधिकांश बच्चे ऑगनबाड़ी से जुड़ गये हैं। बच्चों को घर से ऑगनबाड़ी लाना, पोषाहार वितरण सहित उन्हें बचपन से ही साफ–सफाई जैसी बातों में ढालने का काम ऑगनबाड़ी की सहायता से मंच कर रहा है। मंच के सदस्यों में बाल पंचायत की अवधारणा को लेकर सेतु द्वारा एक्सपोजर यात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें मंच के चयनित सदस्यों ने अन्य बाल मंचों के सदस्यों और अध्यक्ष व उपाध्यक्ष से मिलकर विभिन्न मुद्दों और बाल मंच के संचालन पर चर्चा की।

बाल मंच की मांगे

1. गांव से सीनियर सेकेण्डरी स्कूल ज्यादा दूर होने के कारण बाल मंच के कुछ सदस्यों की प्राथमिक शिक्षा के बाद ही स्कूल जाना छूट गया है। सदस्यों की मांग है कि उन्हें सहयोग के लिये सेतु उनका मार्गदर्शन करे।

2. मंच से जुड़ी किशोरियां सामाजिक परिस्थितियों का हवाला देते इस बात की मांग कर रही है कि मंच की मदद से उन्हें कुछ ऐसे कार्यक्रमों में शामिल किया जाये, जिससे कि वह रोजगार के अवसर पा सकें। उदाहरण के तौर पर सिलाई प्रशिक्षण, दरी बुनाई इत्यादि।

बाल मंच की आगे की योजना– मंच का सपना है कि उनका समुदाय इस तरह से तैयार हो कि वह अपने परेशानियों के समाधान के लिये खुद कदम उठाये। उदाहरण के तौर पर शिक्षा से वंचित बच्चों के परिवारों ने मंच द्वारा शिक्षा के महत्व और शिक्षा के अधिकारों को जानने के बाद अपने बच्चों के प्रति संवेदनशीलता दिखाना शुरु कर दिया है। वह बच्चों को स्कूल से जोड़ने के लिये मंच के साथ आ गये हैं। मंच चाहता है कि भविष्य में ऐसे परिवार खुद ही यह कदम उठाये और अपने रिश्तेदार व अन्य जगहों पर भी इस तरह के परिवारों को जागरुक करें। साथ ही समुदाय में भेदभाव की भावना खत्म हो।

507 हैड के बाल मंच की कहानी

बीकानेर जिले की लूणकरणसर पंचायत समिति के नहरी इलाके में स्थित 507 हैड के बाल मंच में 12 से 18 आयु वर्ग के 31 सदस्य है। जिनमें 13 लड़के और 18 लड़कियां हैं। मंच के गठन के दौरान सदस्यों की सहमति से मंच में अध्यक्ष–तोलाराम और सचिव खानी खातून का चयन किया गया। मंच के सदस्य हर महीने की 4 तारीख को अपनी बैठक करते हैं। बाल मंच के सदस्यों में से कई उच्च शिक्षा जैसे कॉलेज व अन्य रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों कोर्सों में दाखिला लेने के बाद गांव से दूर बीकानेर शहर में आकर रहने लगे हैं। लेकिन वह अस्थायी तौर पर मंच से अभी भी जुड़े हुये हैं। वह समय निकालकर बाल मंच की बैठकों में भाग लेते हैं और अपनी बातों को रख मंच को आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करते हैं। इससे मंच के सदस्यों को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।

मंच के कार्य

इस गांव में सेतु किशोरी प्रेरणा मंच की मदद से महिलाओं के स्वास्थ्य और सशक्तिकरण को लेकर पहले से ही काम कर रहा था। बाल मंच के गठन के बाद उरमूल सेतु कार्यकर्ताओं ने गांव में स्कूल जाने वाले बच्चों को बाल मंच से जोड़ना शुरु कर दिया। जनवरी 2010 में ग्याहरवीं कक्षा में पढ़ने वाला छात्र मुखराम बाल मंच से आकर जुड़ा। मंच की मासिक बैठकों में उसे शिक्षा के अधिकार अधिनियम के बारे में उरमूल कार्यकर्ता दुरजन राम ने सीख दी। जहां मंच के सदस्यों को यह भी समझाया गया कि उनके समुदाय में शिक्षा से वंचित बच्चों को स्कूल से जोड़ना निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अधिकार कानून का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

स्कूल जाने में उसका डर और परिवारजनों की लापरवाही के कारण वह बचपन में ही स्कूल से दूर हो गया और उसने पढ़ना छोड़ दिया। टेकचंद घर पर रहकर अपने पिता का खेती में हाथ–बटाता था। मुखराम ने मंच के अध्यक्ष तोलाराम के साथ मिलकर टेकचंद को स्कूल में प्रवेश लेने के लिये कहा। लेकिन उसने मना कर दिया। हालांकि टेकचंद के परिजन उसे स्कूल भेजने के लिये राजी थे। लेकिन टेकचंद की हां नहीं थी।

मंच के सदस्यों ने सेतु कार्यकर्ता दुरजनराम के साथ मिलकर टेकचंद को यह समझाया कि अगर वह पढ़–लिख न सका तो उसे भविष्य में बड़ी दिक्कतों का सामना करना पढ़ेगा। भाई मुखराम ने उसे यह भी बताया कि अनपढ़ होने के कारण बाहर ही नहीं घर में भी उसकी बातों को परिवार गंभीरता से नहीं लेगा। टेकचंद ने मंच के सदस्यों की बातों को समझा। टेकचंद को शिक्षा के अधिकार के तहत छठी कक्षा में प्रवेश मिला और वह अब सातवीं कक्षा में पढ़ रहा है। वहीं मुखराम ने भी बारहवीं पास कर बीकानेर स्थित डूंगर कॉलेज में प्रवेश के लिये आवेदन कर दिया है। हालांकि वर्तमान में भी आसपास के चक से कुछ बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं। जिनको स्कूल से जोड़ने के लिये मंच के सदस्य प्रयास कर रहे हैं। मंच की किशोरी सदस्य मंच की प्रतिमाह होने वाली बैठकों में जानकारियों को इकट्ठा कर महिलाओ को टीकाकरण, प्रसूति के समय उचित देखभाल,

पोषणयुक्त आहार, शारीरिक देखभाल, रोगों से बचाव के लिये जानकारी, बच्चों, गर्भवती, धात्री महिलाओं को ऑगनबाड़ी से जोड़ने जैसे कार्यों में अपने आपको शमिल कर रही हैं। इसके लिये वह आशा सहयोगिनी और ऑगनबाड़ी कार्यकर्ता की मदद लेती है। बाल मंच सेतु के सहयोग से एक पुस्तकालय का संचालन भी करता है। कुछ सदस्य पुस्तक घर ले जाकर पढ़ते है, जबकि कुछ सदस्य समूह में बैठकर अध्ययन करते हैं। इसके साथ–साथ मंच के सदस्य प्रतिदिन सेतु द्वारा स्थापित सब सेंटर पर आकर इन डोर गेम्स खेलते हैं।

मंच के सदस्यों ने स्कूल के प्रबंधन में खासा योगदान दिया है। मंच के सदस्य स्कूल में साफ–सफाई, पेड–पौधों का रखरखाव एवं व्यक्तिगत स्वच्छता को एक जिम्मेदारी की तरह लेते हैं। मंच के सदस्यों का प्रयास है कि वह मंच द्वारा संचालित पुस्तकालय की तरह ही स्कूल के पुस्तकालय से भी किताबे ले। लेकिन उनसे अध्यापकों का तालमेल नहीं बन पाया है। इसका मुख्य कारण स्कूल में शिक्षकों की अनियमितता है। हालांकि मंच के सदस्य शिक्षक न होने पर स्कूल में व्यवस्था बनाये रखने में सहयोग देता है। शिक्षकों की अनियमितता को लेकर उन्होंने अपने प्रस्तावों को सेतु कार्यकर्ताओं की मदद से आला अधिकारियों तक पहुंचाया है। हालांकि उनकी तरह से अभी तक कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है।

बाल मंच की मांगें–

1. उनके प्रस्तावों को आला अधिकारियों तक इस तरह से रखा जाये ताकि उनकी समस्याओं पर ठोस कदम उठाया जाये।

2. मंच से आगे निकले किशोर और युवाओं से समय–समय पर उनका जुड़ाव रहे ताकि उनमें प्रेरणा का स्रोत बना रहे।

3. मंच की किशोरियों के अनुसार कुछ परिवार अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा के लिये बीकानेर आदि जगहों पर भेज रहे हैं। जबकि कुछ परिवारों की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर है कि वह अपनी बेटियों को उच्च शिक्षा नहीं दिला सकते। मंच की किशोरी सदस्य चाहती है कि सेतु की सहायता से उन्हें प्राइवेट तौर पर एडमिशन दिलवाकर मंच के माध्यम से पढ़ाने की व्यवस्था कर दी जाये तो अच्छा रहेगा।

बाल मंच की आगे की योजना– शिक्षा से वंचित बच्चों को स्कूल से जोड़ना मंच के सदस्यों की प्राथमिकता है। मंच का सपना है कि उसके सदस्य उच्च शिक्षा लेकर वापस आयें और अपने समुदाय में शिक्षक के तौर पर बच्चों का पढ़ाये ताकि गांव में शिक्षा का माहौल और स्तर बेहतर हो सके। उनके ऐसा करने से समुदाय के विकास और सोच में एक बड़ा परिवर्तन आयेगा।

शिक्षा से वंचित अपने साथियों को स्कूल से जोड़ने और स्कूल में बिना किसी भेदभाव के पढ़ने और एक दूसरे का हौसला बढ़ाते हुये आगे बढ़ने की भावना बच्चों में जगाने के लिये उरमूल सेतु संस्थान ने खासा योगदान दिया है। उनके उदाहरण उन जगहों पर अच्छी तरह से देखे जा सकते हैं। जहां कुछ साल पहले ही जातिगत भेदभाव उच्च स्तर पर था। अब बच्चे स्कूल में मिलकर खाना खाते हैं। एक साथ बैठते हैं। एक ही डंडी वाले गिलास से पानी पीते हैं।

रामबाग गांव के लक्ष्मीबाई मंच की कहानी

बीकानेर जिले की लूणकरणसर पंचायत समिति के लगभग 400 घरों वाले इस गांव में स्थित लक्ष्मीबाई बाल मंच पुराने बाल मंचों में से एक है। जो यहां के सामाजिक परिवेश को धीरे–धीरे बदलने में प्रयासरत है। इस मंच में 20 सदस्य है। इनमें से अधिकतर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। बाल मंच के कुछ सदस्य अपने परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिये गांव ओर महाजन, लूणकरणसर और बीकानेर के बाजारों में काम करते हैं। ये सभी बाल मंच के माध्यम से मिलने वाली जानकारियों को अपने जीवन में ढालने के लिये पूरी कोशिश करते है।

मंच के कार्य

मंच के सदस्यों की सहमति से मंच के अध्यक्ष बनवारी और उपाध्यक्ष मंजू का चयन किया गया। इस गांव में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन लाने में बाल मंच ने बहुत सहयोग दिया। गांव के अधिकांश पुरुष काम की व्यस्ता के कारण घर की परिस्थितियों में अपनी जिम्मेदारी को पूरी तरह से निभा नहीं पाते थे। ऐसे में महिलाओं की स्थिति ऐसी हो गई थी कि वह अपनी ही परेशानियों को अपने परिवार के समक्ष नहीं रख पाती थी। बाल मंच ने यहां की महिलाओं की स्थिति को जाना और उनकी हिचक तोड़ने का काम किया। जिससे वह समुदाय और विकास की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सामने आई। मंच की किशोरियों ने घर–घर जाकर महिलाओं से बात की। जिनसे उनकी स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां निकलकर सामने आई। महिलाओं को अपने स्वास्थ्य की जांच कराने के लिये मंच के सदस्यों ने गांव की आशा सहयोगिनी और एएनएम की मदद ली। उन्होंने मिलकर महिलाओं को इकट्ठा किया और सभी रोगी महिलाओं के इलाज की प्रक्रिया शुरु हो गई। हालांकि पहली बार झिझक के कारण कई महिलायें एएनएम से चेकअप करवाते समय भी अपनी स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों को डॉक्टर को नहीं बता पाती थी। लेकिन एएनएम और बाल मंच के सदस्यों ने उनकी इस झिझक को उनसे बातचीत करके तोड़ा।

रामबाग की निर्मला बताती है, **"मैं भी उनमें से एक थी। लेकिन आज मैं आपसे पहली बार मिली हूं और आपसे बेझिझक बात कर रही हूं। उन स्थितियों से गुजरी हूं और अब आपके सामने इस मंच की बात को रख रही हूं। गांव की महिलायें अब आपस में मिलकर अपनी दिक्कतों पर एक दूसरे से बात करती हैं।"**

मंच के सदस्य समुदाय के बीच शिक्षा के महत्व को बताने में जुटे हुये हैं। शिक्षा के संसाधनों में गांव के बच्चों के लिये एक सरकारी माध्यमिक स्कूल है। गांव के परिवार अपने आपको आर्थिक मजबूरी और गांव के माहौल की वजह से अपने बच्चों को शिक्षा से वंचित रख रहे थे। गांव के किशोर गांव और उसके आसपास स्थित बाजारों जैसे बीकानेर में आकर परिवार को आर्थिक सहयोग दे रहे हैं। मंच ऐसे किशोरों के साथ मिलकर और उनके उदाहरण को पेश कर लोगों के बीच शिक्षा के महत्व के प्रति जागरुकता लाने का काम कर रहे हैं।

गांव में रहने वाले जेठाराम ने छठी कक्षा में पढ़ाई के बाद स्कूल छोड़ दिया था। परिवार को आर्थिक सहयोग देने के लिये जेठाराम ने गांव के किसानों के खेत में मजदूरी करना शुरु कर दिया। इसके साथ–साथ वह बीकानेर में आकर ठेकेदारों द्वारा दिया गया मजदूरी का काम करता है। संस्था द्वारा बाल मंच के गठन के बाद मंच की गतिविधियों से प्रभावित होकर जेठाराम बाल मंच से जुड़ा। जहां प्रतिमाह होने वाली बैठकों, सेतु द्वारा समय–समय पर आयोजित

प्रशिक्षणों एवम् अन्य मंचों के भ्रमण के बाद जेठाराम ने शिक्षा के महत्व के बारे में जाना। सेतु कार्यकर्ताओं ने प्रतिमाह होने वाली बैठकों में शिक्षा और बाल अधिकार जैसे विषयों पर बातचीत की और मंच के सदस्यों को जानकारी दी। रामबाग गांव में कई बच्चे ऐसे है जो स्कूल से नहीं जुड़ पाये थे। जेठाराम मंच के सदस्यों के साथ मिलकर ऐसे परिवारों को शिक्षा के महत्व के बारे में जागरुक करने में जुट गया है। वहीं गांव के कुछ बच्चे ऐसे भी है जो परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण स्कूल नहीं जाते थे। जेठाराम ने मंच के सदस्यों के साथ मिलकर ऐसे परिवारों को बताया कि स्कूल में एडमिशन से लेकर पढ़ाई तक की सारी सुविधायें निःशुल्क है।

इसके साथ ही शिक्षा के साथ–साथ स्कूल जाने वाले बच्चों को सरकार द्वारा समय–समय पर चलाई जाने वाली योजनाओं के तहत लाभ भी मिलता है। इसलिये वह अपने बच्चों को मजदूरी या अन्य तरह के कामों पर न भेजकर स्कूल भेंजे। हालांकि जेठाराम और मंच के सदस्यों के इस प्रयास ने अभी तक किसी बच्चे को स्कूल से जोड़ने में सफलता नहीं पाई है। लेकिन समुदाय में शिक्षा के महत्व की जागरुकता की नीव डालने में मंच सफल रहा है। जेठाराम ने भी दोबारा पढ़ाई करने का फैसला लिया है और वह पत्राचार के माध्यम से आगे पढ़ाई करने के लिये प्रवेश की प्रक्रिया में जुट गया है। बाल मंच और जेठाराम से संयुक्त बातचीत का सार

मंच के सदस्य अपने स्कूल में प्रार्थना और बाल सभा का संचालन करते हैं। इसके साथ ही वह अपने सहपाठियों के साथ बनाई गई टीम के साथ साफ–सफाई, पेड़–पौधों में पानी देने जैसे कार्य करते हैं। बाल क्लब स्कूल में समय–समय पर होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है और साथ ही कार्यक्रम के दौरान होने वाली गतिविधियों को भी तय करता है। नेतृत्व की इस प्रक्रिया की समझ मंच के सदस्यों को समय–समय पर उरमूल सेतु द्वारा आयोजित मेलों–समागम में भागीदारी के बाद सीखने को मिली है।

बाल मंच की मांगें–

1. मंच के सदस्य जो पहले शिक्षा से वंचित रह गये थे और अब शिक्षा के अधिकार अधिनियम में तय आयु सीमा (14 वर्ष) से आगे निकल गये हैं। वह सभी फिर से शिक्षा से जुड़ना चाहते हैं। इसके लिये उन्होंने मुक्त और पत्राचार के माध्यम से प्रवेश की प्रक्रिया भी शुरु कर दी है। मंच के ऐसे सदस्यों की मांग है कि उन्हें आगे की पढ़ाई में मदद के लिये सेतु सहयोग करे।

2. मंच की किशोरी सदस्यों की मांग है कि सेतु द्वारा समय–समय पर आयोजित किये जाने वाले सिलाई प्रशिक्षण में उन्हें भी प्रवेश मिले।

बाल मंच की आगे की योजना– मंच के सदस्यों की योजना शिक्षा से वंचित बच्चों को स्कूल से जोड़ना है।

बखुसर गांव के बाल मंच की कहानी

बीकानेर जिले की लूणकरणसर पंचायत समिति के इस गांव में स्थित बाल मंच में 10 से 16 आयुवर्ग के 25 सदस्य है। इनमें 15 किशोरियां और 10 किशोर हैं। मंच मासिक बैठकों में सेतु कार्यकताओं से स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़े पहलुओं पर जानकारी लेता है। जिसे वह अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में अपनाने के साथ–साथ गांव के लोगों को भी उन जानकारियों से अवगत कराते हैं। मंच के सदस्यों की सहमति से मंच के अध्यक्ष नोभ सिंह, उपाध्यक्ष मंजू और सचिव बजरंग सिंह का चयन किया गया।

मंच हर महीने की 10 तारीख को अपनी मासिक बैठक करता है जिसमें वह अपने आसपास के मुद्दों पर चर्चा करता है। इन मुद्दों की स्पष्टता के लिये सेतु कार्यकर्ता उनका मार्गदर्शन करते हैं।

मंच के कार्य

सेतु कार्यकर्ताओं ने इस गांव में बच्चों का चयन कर बाल मंच की स्थापना की। जिसमें स्कूल जाने वाले सभी बच्चों को जोड़ा गया। चूंकि संस्थान इस इलाके में पिछले दो दशकों से कार्य कर रहा है इसलिये सेतु कार्यकर्ताओं को थोड़ी सी मशक्कत के बाद बाल मंच के सदस्यों के परिवार को बाल मंच के महत्व को समझाने में सफलता प्राप्त हुई। मंच के गठन के बाद मंच ने सबसे पहले स्कूल प्रबंधन की बारीकियों को समझा क्योंकि स्कूल ही एक ऐसा केंद्र है जहां वह मिलकर अपनी बातों को एक–दूसरे के सामने रख सकते है। स्कूल प्रबंधन के गुर सिखाने में सेतु कार्यकर्ताओं ने उनका मार्गदर्शन किया। सेतु कार्यकर्ताओं ने उन्हें बताया कि कैसे स्कूल में साफ–सफाई, पुस्तकालय और बाल सभा व प्रार्थना का संचालन, वृक्षारोपण, शिक्षक की अनुपस्थिति में स्कूल व्यवस्था चलाई जा सके ताकि स्कूल में एक सकारात्मक वातावरण पैदा हो।

मंच के सदस्यों ने इस बात को सीखा और फिर धीरे–धीरे इस काम में जुट गये। बच्चों में अच्छे मूल्यों का विकास, सुरक्षित गांव और भविष्य की सोच के साथ समुदाय में अपनी भागीदारी की पहल यहां का बाल मंच कर रहा है। मंच के सदस्य भूपेंद्र ने बताया कि मंच के सभी सदस्यों ने हाल ही में प्रतिमाह होने वाली बैठक में पर्यावरण के मुद्दों पर चर्चा की। बैठक में पर्यावरण के बचाव की जानकारी सेतु कार्यकर्ताओं द्वारा जानने के बाद मंच ने यह निर्णय लिया कि धीरे–धीरे मंच गांव को हर–भरा बनाने का काम करेगा। इसके तहत मंच के सदस्य अपने घर और आसपास में पेड़ लगायेंगे। मंच ने यह भी निर्णय लिया कि सिर्फ पेड़ लगाने भर से जिम्मेदारी खत्म नहीं हो जाती उसे आगे बढ़ाने के लिये भी देखरेख भी जरुरी है।

मंच के सदस्य विनोद ने बताया कि उसने हाल ही में अपने घर के सामने दो पौधे लगाये हैं। जिनमें एक पौधा नीम का है। वह पौधों को बराबर पानी देता है। साथ ही पौधे का कोई नुकसान न हो इसके लिये उसने चौतरफा ईट का अस्थायी चौटा बनाकर उसके अगल–बगल सूखे कांटों वाली टहनियां लगा दी हैं। हालांकि कुछ पौधे सही तरीके से नहीं रोपे जाने के कारण सूख गये। लेकिन लगभग 70 फीसदी पौधों ने बढ़ना शुरु कर दिया है। मंच ने तय किया है कि वह अपने द्वारा लगाये गये पौधों की देखरेख हमेशा करेंगे। गांव में पानी निकासी की व्यवस्था कमजोर देखी जा सकती है। जरा सी बारिश होने पर ही गांव के कच्चे रास्तों पर पानी भर जाता है। गांव में बड़ा तालाब और कुंड भी हैं। कुंड में जल का संचन तो ठीक प्रकार से हो रहा है लेकिन पुराने खुले कुंड जिनको पक्का भी कर दिया गया है बारिश के समय मुसीबत का सबब बन जाते हैं। इनमें मच्छर पैदा होने से मलेरिया जैसी बीमारियों का खतरा पैदा हो जाता है। मंच अपनी बैठकों के माध्यम से मलेरिया के बारे में जानकारी इकट्ठा कर गांव के लोगों को जागरुक कर रहा है। टांकों को ढ़क कर रखना, मच्छर की पैदावार रोकने के लिये दवा डालना, बार–बार बुखार होने पर तुरंत डॉक्टर को दिखाना और खून की जांच करवाना, पानी रुकने वाली जगह पर मौजूद कीकर को काट कर हटा देना जैसी जानकारियों को वह अपने घर और आस–पड़ोस में देने का काम कर रहे हैं।

बाल मंच की मांगें–

1. सेतु के सहयोग से संचालित पुस्तकालय के प्रबंधन में सदस्य बेहतरी चाहते हैं। उनकी मांग है कि पुस्तकालय को हर सप्ताह खोला जाये। जबकि वर्तमान में पुस्तकालय सिर्फ बैठक वाले दिन ही खुलता है। मंच के सदस्यों की यह मांग भी है कि सेतु के सहयोग से मंच को खेलकूद का सामान मिले। जिसके लिये वह शुल्क देने को भी तैयार हैं।

बाल मंच की आगे की योजना– मंच के सदस्यों का सपना है कि गांव के सभी बच्चे आगे चलकर उच्च शिक्षा प्राप्त करें। जिससे कि उनका और उनके समुदाय का विकास हो।

बच्चों के विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले अभिभावकों और समुदाय के लोगों को बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाने में उरमूल सेतु संस्थान समय–समय पर सामूहिक चर्चा, समस्याओं से संबंधित सरकारी विभागों के आला अधिकारियों से नेटवर्किंग बैठक आदि जैसे कार्यक्रमों का आयोजन करता है। ताकि बच्चों सहित समुदाय का भी सामूहिक विकास हो।

उपलब्धियां

समूह में एकता के साथ काम करना–समूह में एकता के साथ काम करने का एक बड़ा उदाहरण बाल मंच खुद है। वह अपने समुदाय से जुड़े मुद्दों को अपनी मासिक बैठकों में रखते है। इन मुद्दों पर सभी अपने विचार रखते है और उन मुद्दों और समस्याओं के समाधान को लेकर एक दूसरे के विचार पर चर्चा करते हैं। जिसके बाद एकजुट होकर अपने अधिकारों को पाने और समुदाय में अपनी भागीदारी को लेकर कार्य करते हैं। चाहे फिर वो शिक्षा से वंचित बच्चों को स्कूल से जोड़ने का काम हो या फिर समुदाय में स्वास्थ्य को लेकर जागरुकता। स्कूल प्रबंधन, गांव की साफ–सफाई आदि जगहों पर भी एकता के साथ समूह में किये जाने वाले उनके कार्य को बखूबी देखा जा सकता है।

नेतृत्व कौशल और अपनी समस्याओं के समाधान के लिये बातचीत– सेतु द्वारा आयोजित कार्यशाला और समय–समय पर आयोजित मेलों में मंच पर अपनी बातों को रखना, कार्यशाला में आये सरकारी अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों के समक्ष अपने मंच का नेतृत्व करते हुये अपनी समस्यों को रखना और उनसे उबरने के लिये मार्गदर्शन लेने जैसे प्रयासों में देखे जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर जून माह में सेतु द्वारा बाल अधिकार पर आयोजित कार्यशाला में आये जनप्रतिनिधियों और सरकारी अधिकारियों के समक्ष खारबारा स्थित बाल मंच के सदस्य गजेंद्र सिंह भाटी ने अपनी बातों को रखा और उनके निराकरण की प्रक्रिया को जाना और अधिकारियों से जरुरत के समय सहायता देने वाले अधिकारियों के फोन नंबर भी लिये।

बाल अधिकारों पर समझ– मंच की गतिविधियों से बाल मंच के समुदाय और समुदाय के बच्चों में बाल अधिकारों को लेकर समझ जागी है। जीने के अधिकार में शामिल पोषण, स्वास्थ्य और साफ–सफाई से रहन सहन, विकास के अधिकार में शामिल मनोरंजन ओर सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेना व भेदभाव रहित रहन सहन और जानकारी व सूचना लेने की चाह यह साफ करती है कि बाल अधिकारों की समझ उनमें पनपनी शुरु हो गई है।

स्वच्छता और स्वास्थ्य – बाल मंच के सदस्यों का समुदाय और साथियों को स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करने का यह लाभ हुआ कि लोग अपने बच्चों को स्कूल भेजने, गांव, घर और आस–पड़ोस की स्वच्छता के साथ–साथ व्यक्तिगत साफ सफाई के प्रति जिम्मेदार हो गये हैं। पहले बच्चे ही नहीं बल्कि बड़े भी साफ–सफाई को लेकर सजग नहीं थे। स्वास्थ्य के बारे में समुदाय के साथ–साथ बच्चों में भी जागरुकता आई है। गांव की महिलाओं में टीकाकरण, एएनएम से इलाज करवाना, और अपनी देखभाल करना आदि देखने को मिलता है।

पर्यावरण की सुरक्षा–गांव और स्कूल में वृक्षारोपण और पौधों की देखरेख बच्चों की पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता दिखाती है।

बच्चों की अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि –बालवाणी का प्रकाशन, समुदाय के मुद्दों को चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित करना। स्कूल में समुदाय में बुरी आदतों जैसे नशा आदि के दुष्प्रभावों को लेकर नाटक, विकास के गीत और नृत्य में बाल मंच के बच्चों का अभिव्यक्ति कौशल दिखाई देता है। इस कौशल से वह अपने अधिकारों के प्रति समुदाय को जागरुक करने में जुटे हुये हैं।

निष्कर्ष

- बाल मंच के सदस्य समुदाय को अपने बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाने के प्रयास में जुटे हुये हैं।
- बाल मंच की गतिविधियों से बच्चों में अच्छे मूल्यों का विकास हो रहा है
- बाल मंच के बच्चे समुदाय के विकास की प्रक्रिया में अपनी भागीदारी भी दिखा रहे हैं।
- मंच के माध्यम से वह अपने बाल अधिकारों को समझने और प्राप्त करने में जुट गये हैं।
- बाल मंच सामुदायिक भागीदारी के तहत शिक्षा से वंचित बच्चों को स्कूल से जोड़ रहे हैं।

सुझाव

1. कुछ मंचों के कुछ सदस्यों में आत्मविश्वास की कमी दिखाई देती है। ऐसे सदस्यों का चयन कर उन्हें उनके कलस्टर में बेहतर तरीके से संचालित बाल मंचों में प्रशिक्षण लेने के लिये भेजना चाहिये। उदाहरण के तौर पर 560 हैड स्थित बाल मंच के सदस्यों में खारबारा स्थित स्वामी दयानंद सरस्वती मंच के सदस्यों की तुलना में आत्मविश्वास की कमी देखी गई है जबकि इस मंच के कुछ सदस्य कॉलेज में शिक्षा लेने जा रहे हैं। ऐसे में 560 हैड संकुल के नेतृत्व करने वाले सदस्य खारबारा में आकर बाल मंच के बेहतर संचालन को समझे और जाने। इससे उनके आत्मविश्वास में बढ़ोतरी होगी, साथ ही उनको बाल मंच के बेहतर संचालन की समझ बनेगी। बाल मंच की भूमिका, और कार्यप्रणाली को समझने का ऐसा प्रशिक्षण दिया जाये जिससे वह अपने बाल मंच को सशक्त बना सकें।

2. अपनी समस्याओं को प्रस्तावों के माध्यम से आला अधिकारियों तक पहुंचाने वाले बाल मंच के प्रस्ताव पर एक्शन न लिये जाने से उन्हें निराशा हाथ लगती है। यह निराशा उनके मनोबल पर असर करती है। इससे बचने के लिये बाल मंच के सदस्यों को समस्या के समाधान के लिये की जाने वाली कार्यप्रणाली के गुर सिखाना जरुरी है। दूसरे शब्दों में कहे तो एडवोकेसी के बारे में समझ पैदा करना जरुरी है ताकि वह उचित प्रक्रिया के माध्यम से अपनी बातों को किसी आला अधिकारी तक पहुंचाये। इससे उनकी समस्याओं के समाधान को लेकर ठोस कदम उठाया जा सकेगा। वहीं बाल मंच और समुदाय के बीच सूचना के प्रचार–प्रसार से वह तकनीकी मदद के साथ अपनी बात को आला अधिकारियों के समक्ष रख सकते हैं। उदाहरण के तौर पर गांव की प्रमुख जगहों जैसे विद्यालय, पंचायत भवन के सूचनापट्ट पर सभी अधिकारियों के फोन नंबर लिखे हुये होने चाहियें। अगर मंच के सदस्य किसी के बाल अधिकारों का हनन होता पाये या देंखे तो वह मोबाइल फोन आदि से तुरंत एसएमएस या कॉल कर उसकी जानकारी आला अधिकारियों को दे सकते हैं।

3. समुदाय व विकास की प्रक्रिया में बच्चों को भरपूर और बिना रोकटोक के भागीदारी का अवसर मिले इसके लिये अभिभावक, जनप्रतिनिधियों और युवाओं को ब्लॉक स्तरीय प्रशिक्षण समय–समय पर दिया जाना चाहिये। समुदाय के समर्थन से ही बच्चे ग्राम सभा में अपनी बातों को तर्कपूर्ण तरीके से रखकर उनपर यथासंभव निष्कर्ष निकालने वाली चर्चाए कर सकते हैं।

4. बाल पंचायत की अवधारणा पर बाल मंचों और संस्थान के कार्यकर्ताओं का अन्य जगहों पर संचालित बाल मंचों पर भ्रमण हो ताकि वह बाल मंच के प्रबंधन व संचालन के गुर सीख सकें।

5. ब्लॉक स्तर पर बाल मंच मेलों का आयोजन समय–समय पर किया जाये। इससे उन्हें अपनी शक्ति का अंदाजा होगा और वह एक दूसरे के बारे में जान सकेंगे। मंच का नेतृत्व करने की क्षमता रखने वाले और उसको आगे तक ले जाने वाले सदस्यों का जिला, राज्य स्तर पर होने वाले बाल समारोह में भ्रमण के लिये लेकर जाना। यहां से उन्हें अपने आपको सशक्त बनाने के लिये नई चीजों को सीखने में मदद मिलेगी।

6. बाल मंच के सदस्यों को पहचान पत्र दिया जाये। यह उनको मंच से हमेशा जोड़े रखने में मदद देगा।

7. माह में एक बार होने वाली बैठक को बढ़ा कर महीने में दो बार किया जाना चाहिये। उनके मुद्दों पर विचार विमर्श करने के लिये यह अच्छा रहेगा।

आभार

बाल मंच पर हुये इस अध्ययन में खारबारा, मकड़ासर, 507 हैड, रामबाग और बखुसर गांव के बाल मंचों का हम आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने इस अध्ययन को सही और पूर्ण करने में सहयोग दिया। सेतु कार्यकर्ताओं की इस अध्ययन में मदद के लिये हम उनके आभारी हैं।

उरमूल सेतु संस्थान के बारे में

उरमूल सेतु संस्थान उत्तरी राजस्थान के रेगिस्तानी लोगों के जीवन की सामाजिक और आर्थिक दशा बदलने के लिये संगठित होकर काम करने वाली संस्था के रूप में जाना जाता है। वंचित और गरीब बच्चों के सम्पूर्ण विकास को केन्द्रित करके काम करना,सुरक्षा तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं अधिकारों के लिये उरमूल परिवार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने कार्यक्रमों के जरिए बच्चों के साथ काम कर रहा है। इस कार्य में उनका सहयोग देने के लिये समय–समय पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बच्चों के विकास के लिये काम करने वाले संगठन साथ आये हैं। वर्तमान में उरमूल सेतु संस्थान, प्लान इंडिया "जो कि बाल केंद्रित सामुदायिक विकास का एक अग्रणी अंतर्राष्ट्रीय संगठन है" के सहयोग से बच्चों के विकास एवम् उनके अधिकारों की चेतना के लिये सक्रिय है।

उरमूल सेतु संस्थान, लूणकरणसर, जिला बीकानेर, राजस्थान–334603.